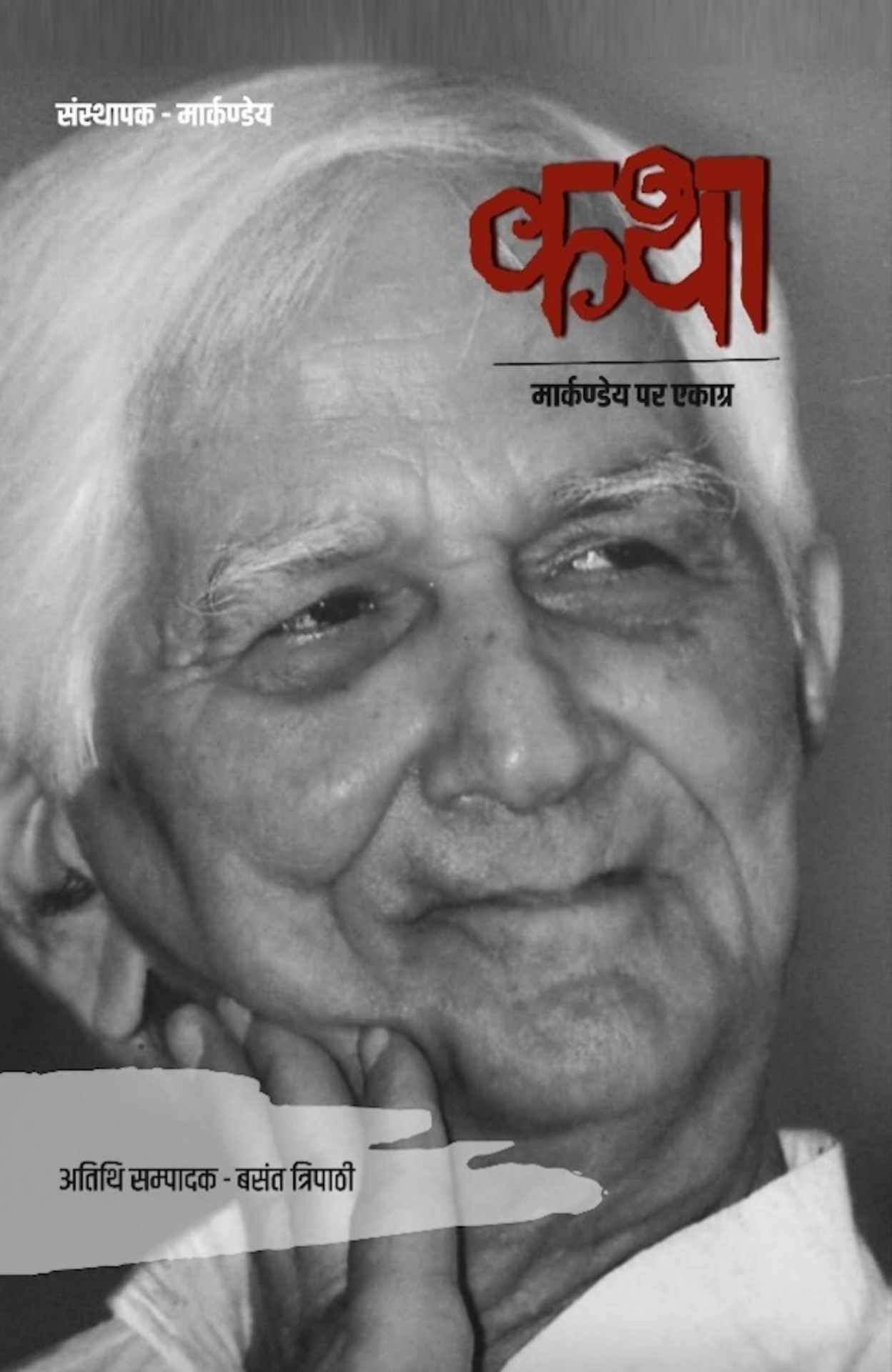

संस्थापक - मार्कण्डेय

कथा

मार्कण्डेय पर एकाग्र

अतिथि सम्पादक - बसंत त्रिपाठी

स्थापना वर्ष : 1969
अंक 25, मार्च 2025

कथा

ISSN : 2277-856x

स्थापना वर्ष	:	**1969**
संस्थापक	:	**मार्कण्डेय**
प्रबन्ध सम्पादक	:	**स्वस्ति सिंह**
सम्पादक	:	**दुर्गा सिंह, सस्या नागर**
अतिथि सम्पादक	:	**बसंत त्रिपाठी**
आवरण डिजाइन	:	**अंकुर**
संगणकीय अक्षर रचना	:	**अमन कम्प्युटर,** प्रयागराज-16
मुद्रक	:	**भगवती प्रिण्टर्स,** प्रयागराज-3
विधिक सलाहकार	:	**सौमित्र सिंह**
न्याय क्षेत्र	:	इलाहाबाद
प्रकाशक	:	**कथा प्रकाशन** 60-सी, थार्नहिल रोड, शक्ति विहार कॉलोनी सिविल लाइंस, प्रयागराज-1
इस अंक का मूल्य	:	रु. 100/- (एक सौ रुपये मात्र)
संपर्क	:	द टैमरिन ट्री, 60-सी, शक्ति विहार कॉलोनी, थार्नहिल रोड, सिविल लाइंस, प्रयागराज-1
दूरभाष	:	09451870000,09415207340
ईमेल	:	kathaprakashan1969@gmail.com

इस अंक में छपे लेखों व लेखकों के विचार से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं।
सभी पद अवैतनिक

अनुक्रम

सम्पादकीय : **बसंत त्रिपाठी** 5

वे दिन : **मार्कण्डेय** 9

पत्र 29

साक्षात्कार

ममता कालिया से शालिनी बाजपेयी की बातचीत 53

हरीशचन्द्र पाण्डे से शिवानी की बातचीत 59

विश्लेषण

मार्कण्डेय की कहानियाँ : **बलराज पांडेय** 65

मार्कण्डेय की कहानियाँ: आजाद देश का परवर्ती गँवई जीवन : **नीरज खरे** 75

मार्कण्डेय की अचर्चित कहानियां : जीवन में जो होता है उसकी खोज : **बलभद्र** 83

कहानीकार मार्कण्डेय: किसान, मजदूर, दलित व स्त्री : **रामकली सराफ** 91

मार्कण्डेय की कहानियाँ : भूमि-सम्बन्ध और सामाजिक-व्यवस्था : **दुर्गा सिंह** 104

संघर्षशील जीवन के जीवट आख्यान : **अनुज कुमार** 119

मार्कण्डेय की कहानियाँ : जीवन-समाज के नये सत्य और नयी दृष्टि : **साक्षी सिंह** 128

स्त्री-मुक्ति के प्रश्न और उसके रागात्मक संबंध : **शिवानी जायसवाल** 135

यह पृथ्वी तुम्हें देता हूँ : मार्कण्डेय का कवि-कर्म : **लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता** 143

समसामयिक रचनाशीलता और चक्रधर की 'साहित्य-धारा : **वीरेन्द्र सिंह** 151

कृति मूल्यांकन

अग्नि बीज : ग्रामीण यर्थाथ का समाजशास्त्र : **रामनिहाल गुंजन** 165

'अग्निबीज' : स्वातंत्र्योत्तर ग्रामजीवन का यथार्थ चित्रण : **उषा व्यंकटराव बनसोडे** 171

रोशनी के वृत्त में आने से क्यों रह गईं सुशीला? : **राकेश बिहारी** 175

'सेमल के फूल' : गाँधीवादी कृत्रिमता से साम्यवादी सहजता... : **आलोक कुमार श्रीवास्तव** 181

हलयोग : जाति विरोधी आंदोलन में दो धाराओं के संघर्ष का दस्तावेज : **रामायण राम** 189

मार्कण्डेय की कहानी 'भूदान' और भूमिहीन किसानों की स्थिति : **अनुराग तिवारी** 196

सम्पादकीय

बसंत त्रिपाठी

जाति और भूमि हिन्दी क्षेत्र को समझने के दो बड़े आधार हैं। राजनीति, स्त्री-पुरुष संबंध, प्रेम, मित्रता, पक्षधरता आदि की तह में इन आधारों को कमोबेश देख सकते हैं। इन्हेंनिकट से देखने और उसे लगातार कथा का हिस्सा बनाने में मार्कण्डेय अद्वितीय हैं। मार्कण्डेय के मानस का निर्माण 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन से लेकर आज़ादी तक और उसके तुरंत बाद के कई उतार-चढ़ावों ने तत्कालीन भारत को समझने और अपनी पक्षधरता प्राप्त करने में मदद की। यही कारण है कि गाँधी और नेहरू पर आस्था रखने के बावजूद वे तत्कालीन राजनीति के अंतर्विरोधों की अनदेखी नहीं करते। इलाहाबाद तो अंतत: उनकी कर्मस्थली थी ही। इलाहाबाद में रहते हुए ही उन्होंने अपने रचनात्मक व्यक्तित्व की ऊँचाइयों को छुआ। यहीं रहते हुए उन्होंने प्रगतिशील आंदोलनों के निहितार्थों को निकट से देखा, परखा और अपने लेखन का अधार बनाया। लेकिन मानव जीवन के कोमल और भावनात्मक पक्षों और संवेदनाओं की उन्होंने कभी अनदेखी नहीं की।

मार्कण्डेय की ख्याति ग्राम्य जीवन से जुड़े कथाकार के रूप में है। उनका आलोचक और टिप्पणीकार भी इसी ज़मीन से साहित्य को देखता है। इसलिए वे वायवीय और कल्पना के धागे से बुनी कलात्मक भाषा और चरित्रों को ज्यादा महत्व नहीं देते। 'कल्पना तो उनकी सहायक होगी, जिनके जीवन में अनुभवों की

सम्पर्क : 9850313062